

दो जिस्म और एकांत

मरे मुख से आहें फूट पड़ी. गांड चुदाने से मेरी उत्तेजना पहले ही बढ़ी हुयी थी. अब उत्तेजना और भी बढाती जा रही थी. उसके लंड के मोटेपन का चूत में

अहसास हो रहा था. ...

Story By: नेहा वर्मा (nehaumaverma) Posted: Monday, November 15th, 2004

Categories: पड़ोसी

Online version: दो जिस्म और एकांत

दो जिस्म और एकांत

मम्मी और पापा आज सवेरे दिल्ली जाने वाले थे। मैं घर पर अकेली थी। पापा ने पड़ोस में रहने वाले शर्मा जी को कहा था की वो मेरी और घर की देखभाल करें। शर्मा जी की बेटी मेरी सहेली है। उसका भाई विनोद २० साल का है और कॉलेज में पढता था। वो मम्मी – पापा के जाने के बाद अपनी किताबें ले कर घर पर आ गया था। उसे बैठक का कमरा दे दिया था।

दो जवान जिस्म और एकांत...फिर पूरी आज़ादी। कुछ तो होना ही था। वो शुरू से ही मुझे पसंद करता था। वो मुझसे बात करने के लिए बार बार मेरे कमरे में आ जाता था। मैं मन ही मन उसकी बात समझती थी और मुस्कुराती थी। मुझे भी वो अच्छा लगता था।

जिस समय वो मेरे कमरे में आया उस समय मैं बाथरूम में नहाने घुसी ही थी। मैंने बाथरूम के दरवाजे के छेद में से झांक कर देखा तो वो बाथरूम की तरफ़ ही देख रहा था। मैं कपड़े उतरने लगी। तभी मुझे लगा कि विनोद दरवाजे के पास आ गया है। मुझे मौका मिल गया उसे पटाने का।

मैंने चुपके से देखा कि बाथरूम के दरवाजे के उसी छेद से... एक आँख झिलमिला रही थी। मैं समझ गयी कि वो मुझे अब देख रहा है। मैंने उसे अपनी और आकर्षित करने के लिए अनजान बनते हुए अपना टॉप उतारा... मेरी चुंचियाँ उछल कर बाहर आ गयी। मैंने चुन्चियों को धीरे से सहलाया और नोकों को मसल दिया।

फिर मैंने छेद की ओर अपनी पीठ करते हुए अपना पजामा उतर दिया। पेंटी भी उतर दी। मेरे चूतडों की गोलाईयां और गहराइयाँ उसकी नजरों के सामने थी। ऐसा करते समय मेरे बदन में सनसनी फ़ैल रही थी, क्योंकि मुझे पता था कि विनोद मुझे नंगा देख रहा है। मैंने





अपना बदन अब उसके सामने कर दिया जिस से उसे मेरी छूट साफ़ दिख जाए। उसकी नजरे अभी भी छेद में चमक रही थी।

मैंने झरना खोला और गरम गरम पानी मेरे शरीर पर पड़ने लगा। मैंने कभी अपनी चुंचियाँ मलती, तो कभी अपनी चूत साफ़ करती। मैं चाहती थी वो मुझे देखे और उत्तेजित हो जाए। मैं नहा चुकी तो मैंने दरवाजे के छेद के पास अपनी चूत सामने कर दी। मेरी चुंचियाँ कड़ी होने लगी थी।

मुझे लगा कि उसे अब मेरी चूत साफ़ नजर आ रही होगी। मैंने अपना बदन तोलिये से पोंछ कर कपड़े पहनने शुरू किए। अब उसकी आँख वहाँ नहीं थी।

मैं बाथरूम से बाहर आयी और अनजान बनते हुए बोली-'अरे... विनोद कब आए..?' 'बस अभी ही आया हूँ...' उसका झूठ पकड़ में आ रहा था। उसका लंड पैंट के ऊपर से उफनता हुआ दिख रहा था।

'क्या बात है... तुम्हारा मुंह लाल क्यूँ हो रहा है...' मैं बालों पर कंघी कर रही थी। उसे छेड़ने में मुझे मजा आ रहा था। मैं उसके सामने बैठ गयी और झुक कर पंखे की हवा में बाल सुखाने लगी। उसकी नजरों के सामने मेरी उभरी हुयी चुंचियाँ टॉप के भीतर से झाँकने लगी।

उसकी नजरें मेरे स्तनों पर गड़ गयी।

मैंने नीचे से ही तिरछी नजरों से उसे देखा... और उसके गर्माते शरीर पर सीधे चोट की... 'विनोद... अन्दर क्या देख रहे हो ... झांक कर ?' 'हाँ... नही... क्या... ?' वो बुरी तरह झेंप गया।

'अच्छा.. अब मैं बताऊँ...िक क्या देख रहे हो तुम...' विनोद एकदम से शरमा गया।







'नेहा... वो... नही... सो... सॉरी...' 'क्या सॉरी... एक तो चोरी...फिर सॉरी...' 'नेहा... अच्छी लग रही थी...सॉरी कहा न '

मैं उसके पैंट पर से लंड के उभर को देख रही थी। उसने ऊपर हाथ रख लिया। 'नहीं देखों... इधर.. 'वो शरमा गया। मैं मुस्कुरा उठी। 'तो कान पकडों...'

विनोद ने अपने कान पकड़ लिए... 'बस...ना...'

हाथ हटाने पर लंड का उभार फिर से दिखने लगा। मैं हंस पड़ी। वो देखो... जो है वो तो दिखेगा ही... '

अब विनोद को समझ में आ गया था कि खुला निमंत्रण है। उसका लंड का आकार तक दिखने लगा था। विनोद उठ कर मेरे पास आ गया। उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा-'नेहा...तुम्हारी भी तो उभार है... एक बार दिखा दो...'

'अरे...मैं तो मजाक कर रही थी... तुम अन्दर देख रहे थे... इसलिए मजाक किया था...' विनोद से रहा नहीं गया उसने एकदम से मेरे गालों को चूम लिया। मैं शरमा गयी... 'विनोद... ये क्या कर रहे हो...'

उसने तुंरत ही मेरे होंट पर अपने होंट रख दिए। मैंने सोचा अब इसे और आगे बढ़ने दो। मुझे मजा आने लगा था।

उसने मेरे भारी स्तनों को पकड़ लिया। उसने स्तनों को मसलना चालू कर दिया। मैं सिमटी जा रही थी। पर उसके हाथों ने मेरे उभारों को मसलना जारी रखा। मैं अपने को बचाती भी





Antarvasna 5/11

रही...पर उसे रोका भी नहीं।

जब उसने मेरे उभारों को अच्छी तरह से दबा लिया तब मैंने जान कर के उसे पीछे की ओर धक्का दे दिया-'बहुत बेशरम हो गए हो...' मेरे हाथ से कंघी नीचे गिर गयी। मैं जैसे ही उठ कर कंघी उठाने को झुकी, मेरे पजामे में से मेरी गांड की गोलाईयां उभर कर विनोद के सामने आ गयी। विनोद बोल उठा-'नेहा बस ऐसे ही रहो...' मैं जान कर के वैसे ही झुकी रही।

'क्या हुआ ... ?'

उसने मेरे नरम नरम गोल चूतडों को हाथ से सहला दिया। गोलाईयां सहलाते हुए उसके हाथ दोनों फाकों की दरार में घुस पड़े ओर फिर अपनी उंगली घुसा कर मेरी गांड के छेद को सहलाने लगा। मुझे बहुत आनंद आ रहा था। मैं वैसे ही जान कर के झुकी रही। अब उसके हाथ मेरी चूत की तरफ़ बढ गए।

मैं सिहर उठी। जैसे ही उसने चूत दबी... चूत का गीलापन उसके हाथ में लग गया। अब उसने मेरी चूत को भींच दिया। मैंने जल्दी से उसका हाथ हटा दिया। और सीधी खड़ी हो गयी।

विनोद मुस्कुराया 'नेहा... मज़ा आ गया... तुम्हें कैसा लगा... ?' 'अब तुम बेशरमी ज्यादा ही दिखा रहे हो... कालेज़ नहीं जाना क्या... ?' मैंने भी उसे मुस्कुरा कर कहा।

हम दोनों ने दोपहर का खाना खाया। फ़िर विनोद कालेज़ चला गया। मैंने अपने कपड़े बदले, पैन्टी और ब्रा उतार दी और सिर्फ़ स्कर्ट और हल्का सा टाप पहन लिया। मैंने सोचा कि अब जब विनोद आएगा तो मुझे चोदे बिना नहीं छोड़ेगा। मैंने हमेशा की तरह अपनी गाण्ड में कीम लगा कर चिकनी कर ली और बिस्तर पर लेट गई। विनोद के बारे में सोचते







सोचते जाने कब मुझे नींद आ गई।

अचानक मेरी नींद खुल गई। मुझे अपनी पीठ पर एक जिस्म का भार महसूस हुआ। मैं सिहर उठी और समझ गई कि यह विनोद है पर मैंने आंख नहीं खोली। विनोद मेरी पीठ पर सवार था और उसका नंगा लण्ड मेरी गाण्ड पर स्पर्श हो रहा था।

मैं नीचे दबी हुई थोड़ी इधर उधर हुई तो उसका लण्ड मेरी गाण्ड के छेद पर टिक गया। मैंने अपनी टांगें थोड़ी और फ़ैला दी। 'नेहा... तुम बहुत अच्छी हो...'

'आऽऽऽह... विनोद...' उसके लण्ड की सुपारी से चिकनाई निकलने लगी जो मेरी गाण्ड को भी चिकना कर रही थी। उसके लण्ड ने अपनी मर्दानगी दिखानी शुरू कर दी, उसके चूतड़ों ने लण्ड पर जोर लगाया और सुपारी छेद में आराम से घुस गई।

'आऽऽऽऽह... अन्दर गया...ऽऽ विनोद...' मेरे मुंह से सिसकारी फूट पड़ी। उसने हल्का सा जोर लगाया तो लण्ड गाण्ड की गहराईयों में रगड़ खाता हुआ उतरने लगा। अब मैंने अपनी गाण्ड ढीली छोड़ दी और टांगें पूरी खोल दी। अब उसके लण्ड का जोर पूरा लग रहा था।

मैंने उसके हाथ पकड़ कर अपनी चुन्चियों पर रख दिए. मैं कोहनियों पर हो गयी और आगे से शरीर को थोड़ा ऊपर कर लिया. उसने अब मेरी चुंचियां पकड़ ली और मसलने लगा. मेरे ऊपर वो चिपका हुआ था. लंड उसका मेरी गांड में पूरा घुसा था पर वो अभी धक्के नहीं मार रहा था. वो मुझे चूमने चाटने में लगा था. उसके होंट मेरे होंट तक नहीं पहुँच पा रहे थे. मैं मस्ती में नीचे दबी पड़ी थी.

अब उसने अपने दोनों हाथ बिस्तर पर रखे और मेरे बदन को उसने मुक्त कर दिया. अब







उसने धीरे धीरे धक्के मारने चालू कर दिए. मैं फिर से बिस्तर पर चिपक कर लेट गयी. और आराम से आंखे बंद कर ली. मैं पूरे मन से गांड चुदाई का आनंद ले रही थी. उसकी स्पीड अब तेज हो गयी थी. उसके लंड से चिकनाई भी निकल रही थी. 'नेहा... आ:हह... मजा आ रहा है...'

'हाँ रे...सी सीई.. आ:...' मैं नीचे लेटे लेटे आँखें बंद करके सिस्कारियां भरती रही. मेरे अन्दर अब मीठी मीठी सी गुदगुदी बढने लगी. नीचे मेरी चूत भी बहुत पानी छोड़ रही थी. सारे बदन में वासना की रंगीन कसक सी बढ रही थी. मुझे ऐसा महसूस होने लगा था की विनोद मेरे अंग अंग को दबा दे, उसे मसल डाले... मेरा सारा कस बल निकाल दे.

'विनोद... करते रहो...जोर से...करो... हाय...' ऐसा लगा आवाज़ मेरी अंतरात्मा से निकाल रही हो. उसके धक्के मेरी गांड में ऐसे आराम से चल रहे थे जैसे कि चूत चुद रही हो. उसी सरलता से... उसी तेजी से...मजा भी उसी के समान आ रहा था...

'हाय... आ अहह हह... नेहा... मैं गया... निकला मेरा...नेहा...' उसके लंड ने मेरी गांड के अन्दर ही सारा वीर्य भर दिया. मेरी गांड में उसका लंड फूलता पिचकता का सा अहसास दे रहा था. उसका पूरा वीर्य निकल चुका था. विनोद मेरे ऊपर ही लेट गया. उसका लंड सिकुड़ कर अपने आप धीरे से गुदगुदी करता हुआ बाहर आ गया. वो एक तरफ़ लुढ़क गया. मेरी गांड में से वीर्य टपक टपक कर बिस्तर पर चूने लगा. मैं वैसे ही उलटी लेटी रही.

मैंने आँख खोली और गहरी साँस ली. मैं तुंरत बिस्तर पर से नीचे आ गयी. तौलिये से अपनी गांड साफ़ की, फिर विनोद का लंड भी साफ़ किया. अब मैं उसके ऊपर चढ़ कर लेट गयी. विनोद ने अपनी आँख खोली... और मुस्कराया... मैंने उसे चूमना चालू कर दिया. एक हाथ नीचे ला कर उसका मुरझाया हुआ लंड पकड़ लिया. और उसे हिलाने लगी, मसलने लगी...





उसके लंड ने फिर से अंगडाई ली और जाग उठा. मैंने उसे अपने हाथों में भर लिया और धीरे धीरे मुठ मारने लगी. कुछ ही देर में उसका लंड चोदने के लिए तैयार था. मैं विनोद के ऊपर लेट गयी. अपनी दोनों टांगे फैला दी.

लंड का स्पर्श मेरी चूत के आस पास लग रहा था. मैंने उसके होंट अपने होटों में दबा लिए. हम दोनों अपने आप को हिला कर लंड और चूत को सही जगह पर लेने की कोशिश कर रहे थे. उसने अपने दोनों हाथों से मुझे जकड लिया. मैंने अपनी जीभ उसके मुंह में घुसा दी.

अचानक मेरे अन्दर आनंद की तीखी मीठी लहर दौड़ पड़ी. उसका लंड फिर एक बार और मर्दानगी दिखने के लिए उतावला हो गया. वो मेरी चूत में रास्ता बनाता हुआ अन्दर घुस गया. मेरे मुंह से एक मीठी सी सिसकारी निकाल पड़ी...'विनोद... अ आह हह हह हह... सी ई स स स ई एई...'

'मजा आ रहा है न नेहा...'

'विनोद... आआह्ह्छ... करते रहो...आ आह हह ह... लगाओ धक्का... आ अह हहृह्छ..'

मेरे मुख से आहें फूट पड़ी. गांड चुदाने से मेरी उत्तेजना पहले ही बढ़ी हुयी थी. अब उत्तेजना और भी बढाती जा रही थी. उसके लंड के मोटेपन का चूत में अहसास हो रहा था. लंड जड़ तक जा रहा था. मैं आनंद से सराबोर हो गयी थी. सिस्कारियां... आहे... फूट रही थी. मेरे चूतड ऊपर से तेजी से चल रहे थे. मैंने उसके हाथ अपनी चुन्चियों पर रख दिए. उसने मेरे स्तनों को मसलना...मरोड़ना... चालू कर दिया. उसने जैसे ही मेरी नोकों को मसलना और खींचना चालू किया. मेरी तो जान निकलने लगी.

'जोर से खींच... मेरे राजा... मसल दे... आ: हुहुछु... मेरे धक्के तेज होने लगे... मैं चरम





सीमा पर पहुँचने लगी थी.

'विनोद...हाय... मैं गयी... हाय... मैं गयी...सी सी ई... अरे..विनोद... रे...' मैंने अचानक ही उसके हाथ मेरी चुन्चियो पर से हटा दिए...और चूत का पूरा जोर उसके लंड पर लगा दिया.

'आ आह्ह ह्ह्ह... विनोद... निकला...निकला... हाय... रे...निकला... हाय... छूट गयी..रीई... आह्ह्ह्छ...'

मैं झड़ने लगी... मेरे चूत की लहरें उसके लंड पर लग रही थी. मैं पूरी झड़ चुकी थी. मैं तुंरत उठी और उसका लंड चूत में से निकाल गया. मैंने उसे अपने हाथों में लेकर कस के दबा लिया...और तेजी से दबा कर मुठ मारने लगी... जोश में उसके चूतड ऊपर उठे और उसके लंड ने फुहार छोड़ दी. उसका लंड रुक रुक कर पिचकारियाँ छोड़ रहा था. मैंने उसका सारा वीर्य उसके लंड पर लगा कर उसकी मालिश करने लगी. थोड़ा वीर्य उसके चूतडों पर और उसकी गांड के छेद पर भी मल दिया.

वो शान्ति से आँखे बंद करके लेट गया था. उसने थकान से अपनी आँखे बंद कर ली. मैं उठ कर बाथरूम में नहाने चली गयी. मैं जब बाहर आयी तो विनोद ने बिस्तर की चादर बदल दी थी. अब वो कपड़े पहन रहा था.

'नेहा तुम आराम करो... मैं चाय बना कर लता हूँ.'

मैंने घड़ी देखी...दिन के 4 बज रहे थे. मैं बिस्तर पर लेट गयी. वो चाय कब लाया मुझे पता नहीं चला। मैं गहरी नींद में सो गयी थी...

पाठक अपने विचार भेजें!







Other stories you may be interested in

बदन और चूत का दर्द मसाज से मिटाया

मेरा नाम कमल सेन है.. अपनी पढ़ाई के लिए मैं पार्टटाइम जॉब हेतु महिलाओं के जिस्म की बॉडी मसाज का काम करता हूँ। अपने काम से मैंने कई मेमों.. गर्ल्स को खुश किया है.. उनके बदन का दर्द हो या [...] Full Story >>>

विधवा टीचर के तन की प्यास

नमस्कार दोस्तो, मैं बहुत दिनों तक व्यस्त रहा, इसलिए कोई कहानी नहीं लिख पाया, जैसे ही मुझे टाइम मिला, मैं हाजिर हो गया अपनी नयी कहानी के साथ। मैं आपको पहले एक बात बताना चाहता हूँ कि काल बॉय का [...]

Full Story >>>

सेक्सी बहन की चूत गान्ड चोदने की तैयारी -3

दोस्तो मेरा नाम शैलेश है.. मैं अपनी 'सेक्सी बहन की चूत और गाण्ड मारने की तैयारी' का अगला भाग लिख रहा हूँ। मुझे बहुत लोगों के ईमेल मिले और लोगों ने मेरी कहानी की तारीफ की, मैं उन सबको बहुत-बहुत [...]

Full Story >>>

कमिसन लड़की और चूत की भूख -1

यह कहानी मुझे एक पाठक ने भेजी थी, अन्तर्वासना डॉट कॉम में प्रकाशित करवाने के लिए... नाम और इमेल गुप्त रखने की शर्त पर... लेखक के शब्दों में कहानी का मज़ा लीजिये!दोस्तो, मैं अपना नाम नहीं बताऊँगा, आप सबकी [...]

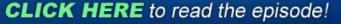
Full Story >>>

भाई ने मेरी गांड का उदघाटन किया -2

शाम को 5 बजे मेरी नींद खुली तो मैंने भाई को भी जगाया। फिर हम दोनों नंगे ही नहाये, हमने कपड़े पहने और शाम के खाने के लिए बाजार में सब्जी लेने के लिए चल दिए। शाम को 7 बजे [...]

Full Story >>>









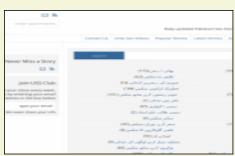
Other sites in IPE

Antarvasna Gay Videos

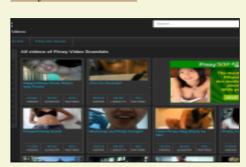


Welcome to the world of gay porn where you will mostly find Indian gay guys enjoying each other's bodies either openly for money or behind their family's back for fun. Here you will find guys sucking dicks and fucking asses. Meowing with pain mixed with pleasures which will make you jerk you own dick. Their cums will make you cum.

Urdu Sex Stories



Pinay Video Scandals



Daily updated Pakistani Sex Stories & Hot Sex Fantasies.

Manood ng mga video at scandals ng mga artista, dalaga at mga binata sa Pilipinas.

Kambi Malayalam Kathakal



Large Collection Of Free Malayalam Sex Stories & Hot Sex Fantasies.

Kinara Lane



A sex comic made especially for mobile from makers of Savita Bhabhi!

Indian Phone Sex



Real desi phone sex, real desi girls, real sexy aunti, sexy malu, sex chat in all indian languages